License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

व्यवस्थाविवरण 1:1–3:29

इस्राएल के लोग मोआब के मैदानों में थे। वहीं वे गिनती की पुस्तक के अंत तक पहुंचे थे। यह कनान की सीमा पर था। उन्होंने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के दौरान वहीं डेरा डाला। व्यवस्थाविवरण इस्राएलियों के साथ परमेश्वर की वाचा के नियमों का दूसरा अभिलेख है। व्यवस्था को उस समय की सामान्य संधि के रूप में दर्ज किया गया है। संधियाँ इस बारे में समझौते थे कि प्रत्येक व्यक्ति या समूह किस चीज़ के लिए ज़िम्मेदार था। वे राजाओं और उनके द्वारा शासित लोगों के बीच आम थीं। व्यवस्थाविवरण में, परमेश्वर राजा हैं और इस्राएली उनके लोग हैं (परमेश्वर के लोग)। व्यवस्थाओं को लंबे संदेशों में दर्ज किया गया है जो मूसा ने अपनी मृत्यु से पहले दिए थे। मूसा ने लोगों को उनकी यात्रा और उनके कारणों के बारे में याद दिलाया। उन्होंने होरेब पर्वत से शुरुआत की। होरेब पर्वत सीनै पर्वत का दूसरा नाम था। उन्होंने उस भूमि की यात्रा की जिसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब को देने का वादा किया था। कादेशबर्ने में, लोगों ने कनान में प्रवेश करने से इनकार कर दिया। वे भयभीत हो गए थे। उन्होंने सोचा कि परमेश्वर उनसे नफरत करते हैं। लेकिन यह सच नहीं था। परमेश्वर उनसे प्रेम करते थे। उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके पास मरूभूमि में भटकते समय सभी आवश्यक चीजें हों। अपनी यात्रा के दौरान इस्राएलियों ने उन लोगों के समूहों पर हमला नहीं किया जिनसे वे संबंधित थे। इसमें एदोम, मोआब और अम्मोन के लोग शामिल थे। लेकिन उन्होंने एमोरियों के खिलाफ लड़ाइयाँ जीतीं और उनके क्षेत्रों में रहने लगे। मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना (प्रार्थना) की और परमेश्वर से कनान में प्रवेश करने की अनुमति मांगी। लेकिन परमेश्वर ने केवल उन्हें भूमि देखने की अनुमति दी। फिर मूसा ने यहोशू को इस्राएलियों को कनान में ले जाने के लिए तैयार करने में मदद की।

व्यवस्थाविवरण 4:1–43

होरेब पर्वत पर मौजूद इस्राएली वयस्कों में से बहुत कम ही जीवित थे। उनमें से अधिकांश मरूभूमि में मर चुके थे। उनके संतान वयस्क हो चुके थे और कनान में प्रवेश करने वाले थे। इसलिए मूसा ने सीनै पर्वत वाचा को दोहराया। परमेश्वर ने कई साल पहले मिस्र छोड़ने वाले इस्राएलियों के साथ वाचा बाँधी थी। लेकिन उन्होंने मिस्र से निर्गमन के बाद पैदा हुए सभी इस्राएलियों के साथ इसे फिर से स्थापित किया। परमेश्वर चाहते थे कि वे जानें कि उनके साथ उनकी वाचा हमेशा के लिए रहेगी। इसलिए मूसा ने उनसे ऐसे बात की जैसे वे होरेब पर्वत पर वयस्क हों। होरेब पर्वत पर लोगों ने परमेश्वर की आवाज सुनी लेकिन कोई आकार या रूप नहीं देखा। इस कारण से उन्हें परमेश्वर की तस्वीरें या मूर्तियाँ नहीं बनानी चाहिए थीं। जो कुछ भी वे देख सकते थे या छू सकते थे उसकी उपासना नहीं की जानी चाहिए थी। एकमात्र सच्चे परमेश्वर वही हैं जिन्हें इस्राएलियों ने होरेब पर्वत पर सुना था। उनकी व्यवस्था ने उन्हें बुद्धिमान और समझदार बनना सिखाया। परमेश्वर चाहते थे कि सभी देश यह पहचानें कि इस्राएलियों का परमेश्वर उनके निकट है। वह चाहते थे कि वे यह पहचानें कि वह कोमल और प्रेममय हैं। वह निष्पक्षता, बुद्धिमत्ता और समझदारी से शासन करते हैं। इससे अन्य देश सच्चे परमेश्वर को जानना और उनकी आराधना करना चाहेंगे। यह एक तरीका था जिससे परमेश्वर इस्राएलियों के माध्यम से सभी देशों को आशीष देंगे।

व्यवस्थाविवरण 4:44–11:32

एकमात्र परमेश्वर वह प्रभु है जिसने इस्राएलियों को गुलामी से बाहर निकाला। व्यवस्थाविवरण 6:4 ने इसे बहुत स्पष्ट कर दिया। वह वचन शेमा कहलाने वाले वचन का हिस्सा है। इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा मानकर यह दिखाना था कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उनकी आज्ञा मानने के लिए, उन्हें वह सब याद रखना ज़रूरी था जो उन्होंने उनके लिए किया था। उन्हें उनकी सभी आज्ञाओं को याद रखना था। इसमें दस आज्ञाएँ भी शामिल थीं। यदि इस्राएली परमेश्वर से प्रेम करते और उनकी आज्ञा का पालन विश्वासयोग्यता से करते, तो परमेश्वर उन्हें कनान में उपयोग करते। वे कनानियों के विरुद्ध न्याय लाने के लिए परमेश्वर का उपकरण होंगे। परमेश्वर कनानियों को बाहर निकाल देंगे। वह इस्राएलियों को वहां शांति से रहने की अनुमति देंगे। इस्राएलियों को नम्र रहना था। परमेश्वर ने उनके साथ कोई वाचा इसलिए नहीं बाँधी थी क्योंकि वे कनानियों से बेहतर थे। वास्तव में, वे बहुत हठीले लोग थे। जब उन्होंने धातु के बछड़े की मूर्ति की उपासना की, वह इसका एक उदाहरण था। कादेशबर्ने का समय भी ऐसा ही था जब उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी। परमेश्वर चुनते हैं कि लोगों के लिए अपना प्रेम कैसे दिखाना है। इस्राएलियों के साथ वाचा बाँधकर उन्होंने इसे प्रकट किया।

व्यवस्थाविवरण 12:1–14:26

इस्राएलियों को एकमात्र परमेश्वर की आराधना करनी थी। उन्हें कनानियों के झूठे देवताओं की उपासना करने की अनुमति नहीं थी। इस्राएलियों को उन झूठे देवताओं से संबंधित हर चीज को नष्ट करना था। उन्हें उन सभी को भी नष्ट करना था जो उन्हें झूठे देवताओं की उपासना करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। इसमें भविष्यवक्ता, उनके अपने परिवार

के लोग और इस्राएल के किसी भी शहर के लोग शामिल थे। इस्राएली बलि के अलावा स्वच्छ जानवरों को मारने और खाने के लिए स्वतंत्र थे। वे जहां भी रहें, ऐसा कहीं भी कर सकते थे। उनके सभी बलिदानों को एक ही स्थान पर लाना था। इसमें उनकी फसलों का दसवां हिस्सा और उनके पशुओं से पैदा हुए पहले नर पशु शामिल थे। बलिदानों को उस स्थान पर लाया जाना था जहां परमेश्वर ने अपना नाम रखना चुना था। इसका मतलब था कि यह वह जगह थी जहां उसने अपनी उपस्थिति प्रकट की। वह स्थान पवित्र तम्बू था। बाद में परमेश्वर ने मंदिर को अपने नाम के लिए विशेष स्थान के रूप में चुना। यह तब हुआ जब इस्राएली कई वर्षों तक कनान में रह चुके थे।

व्यवस्थाविवरण 14:27–16:17

व्यवस्थाविवरण ने कई तरीकों से सिखाया कि इस्राएलियों को जरूरतमंद लोगों की देखभाल कैसे करनी चाहिए। जिन लोगों ने अपनी ज़मीन पर सफलतापूर्वक खेती की थी, उन्हें ज़रूरतमंदों को मुफ़्त में देना था। इस क्रिया ने दिखाया कि वे क्या सोचते और महसूस करते थे। इसने दिखाया कि वे परमेश्वर के प्रति आभारी थे कि उन्होंने उन्हें सब कुछ दिया। इसने दिखाया कि वे उस पर भरोसा करते थे कि वह उन्हें प्रदान करता रहेगा। इसने दिखाया कि वे दूसरों के प्रति दया से भरे हुए थे। मूसा ने इसे एक ऐसे हृदय के रूप में वर्णित किया जो कोमल था। इससे परमेश्वर प्रसन्न होते थे। हर तीन साल में इस्राएलियों को अपनी फसलों का दसवां हिस्सा अलग रखना पड़ता था। इसका उपयोग लेवियों और उनके समुदायों में जरूरतमंद लोगों के लिए किया जाता था। हर सात साल में सभी इस्राएलियों को उन अन्य इस्राएलियों का ऋण माफ करना पड़ता था जो उन्होंने लिया था। उन्हें अपने सेवकों को भी मुक्त करना पड़ता था। भोज के दौरान, उन्हें अपना भोजन जरूरतमंद लोगों के साथ साझा करना पड़ता था। इससे हर किसी को परमेश्वर की आराधना करते हुए आनंद से भरपूर होने में मदद मिलेगी।

व्यवस्थाविवरण 16:18–18:22

इस्राएल के अगुवों को निष्पक्ष होना और वही करना था जो सही था। अगुवों में न्यायाधीश और इस्राएल के 12 गोत्रों के अधिकारी शामिल थे। इनमें लेवीय, याजक, राजा और भविष्यवक्ता भी शामिल थे। अगुवों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना था। उन्हें लोगों को भी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में मदद करनी थी। उन्हें कभी भी लोगों को झूठे देवताओं की आराधना करने के लिए प्रेरित नहीं करना था। न ही उन्हें कनानी लोगों की तरह उनके देवताओं की उपासना करने के तरीके की नकल करनी थी। इस्राएलियों को अपने अगुवों का सम्मान करना था। वे अगुवों द्वारा बताए गए कार्यों को करके अपना सम्मान दिखाते थे। वे लेवीय और याजकों के साथ अपने भेंटों को साझा करके भी सम्मान दिखाते थे। मूसा ने एक भविष्यवक्ता का उल्लेख किया जो उसके जैसा होगा। मूसा के बाद कई भविष्यवक्ता परमेश्वर और इस्राएलियों के लिए विशवाशयोग्य मध्यस्थ थे। लेकिन कई साल बाद, लोगों ने समझा कि यह यीशु के बारे में भविष्यवाणी थी। यीशु वह भविष्यवक्ता था जिसके बारे में मूसा ने बात की थी।

व्यवस्थाविवरण 19:1–26:19

सीनै पर्वत की वाचा में इस्राएलियों के बीच सामुदायिक जीवन के बारे में कई नियम शामिल थे। अपराधों, विवाह, परिवार, व्यापार और युद्ध के बारे में नियम थे। इनमें से कई नियम उन नियमों के समान थे जो इस्राएलियों के आसपास के लोग समूहों द्वारा पालन किए जाते थे। उन्होंने उस समय में सामान्य प्रथाओं को दिखाया। परमेश्वर ने अपने लोगों को अन्य नियम भी दिए जो सामान्य प्रथाओं से अलग थे। इन नियमों ने दिखाया कि परमेश्वर के लोग उनके लिए कैसे पवित्र और अलग होने चाहिए। इस्राएलियों को एक-दूसरे का ख़याल रखना था। उन्हें किसी का फायदा नहीं उठाना था। इसके बजाय, उन्हें हमेशा सही और निष्पक्ष काम करना था। इससे यह दिखा कि वे याद रखते थे कि परमेश्वर ने उन्हें गुलामी से कैसे बचाया था। इससे यह भी दिखा कि वे उस पर भरोसा करते थे कि वह उनकी सभी जरूरतों को पूरा करेगा। इन नियमों ने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार था। वे अपने विचारों, शब्दों और कार्यों के लिए जिम्मेदार थे। और एक समुदाय के रूप में वे सभी परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार थे। इससे उन्हें परमेश्वर द्वारा दी गई सभी अच्छी चीजों का आनंद लेने की अनुमति मिली। परमेश्वर के लोग होने की वजह से इस्राएली सभी लोगों के बीच परमेश्वर के लिए एक विशेष खज़ाना बन गए।

व्यवस्थाविवरण 27:1–30:20

इस्राएलियों को परमेश्वर द्वारा दी गई भूमि के बीच में एक वेदी बनानी थी। उस पर उन्हें परमेश्वर के साथ अपनी वाचा का अभिलेख लिखना था। फिर 12 गोत्रों को वाचा के आशीष और वाचा के श्राप जोर से बोलना था। उन्हें गिरिज्जीम पर्वत से आशीर्वाद की घोषणा करनी थी।उन्हें श्रापों की घोषणा एबाल पहाड़ से करनी थी। इस तरह पूरी समुदाय समझ सकेगी कि वाचा का पालन करने का क्या मतलब है। वाचा की आशीष जीवन की ओर ले जाती थी । समुदाय यह भी समझ सकेगी कि अगर वे आज्ञा का उल्लंघन करेंगे तो क्या होगा। वाचा के श्राप मृत्यु की ओर ले जाते थे। हालात इतने खराब हो जाएंगे कि मिस्रवासी भी इस्राएलियों को फिर से गुलाम नहीं बनाना चाहेंगे। मूसा ने लोगों से विनती की कि वे परमेश्वर से जीवन चुनें न कि मृत्यु। फिर भी वाचा के श्रापों के बाद भी वे परमेश्वर की ओर लौट सकते थे। वे फिर से उनकी आज्ञा मानकर

व्यवस्थाविवरण *31:1–34:12*

अपना प्रेम दिखा सकते थे। जैसे ही वे ऐसा करेंगे, परमेश्वर उन्हें फिर से आशीष देने के लिए तैयार होगा।

व्यवस्थाविवरण 31:1–34:12

मूसा को प्रभु का सेवक कहा जाता था। उन्होंने मिस्र से कनान की सीमा तक इस्राएलियों की अगुवाई करके परमेश्वर की सेवा की। उन्होंने इस्राएलियों को परमेश्वर के मार्गों के अनुसार जीना सिखाकर परमेश्वर की सेवा की। उन्होंने उन्हें तैयार किया कि वे उनकी मृत्यु के बाद भी परमेश्वर की व्यवस्था को सुनते और उनका अध्ययन करते रहें। उन्होंने यहोशू को कनान में लोगों की अगुवाई करने के लिए तैयार करके परमेश्वर की सेवा की। उन्होंने इस्राएलियों को चेतावनी देकर और उन्हें आशीष देकर परमेश्वर की सेवा की। मूसा ने उन्हें एक गीत के माध्यम से चेतावनी दी। गीत इस बारे में था कि परमेश्वर कौन है और उन्होंने इस्राएल की देखभाल कैसे की। गीत इस बारे में भी एक भविष्यवाणी थी कि कैसे इस्राएली परमेश्वर का अनुसरण करना बंद कर देंगे। मूसा ने प्रत्येक गोत्र को आशा के शब्दों से आशीष देने के लिए एक गीत भी गाया। आशीष और आशा के शब्द परमेश्वर पर आधारित थे। परमेश्वर ही उन्हें सुरक्षित रखेंगे और उन्हें वह सब कुछ देंगे जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। परमेश्वर उनका राजा और उद्धारकर्ता थे। मूसा केवल एक सेवक थे। उनकी मृत्यु के समय तक भी उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी ।